

हनुमान वडवानल स्तोत्र

विनियोग

ॐ अस्य श्री हनुमान् वडवानल-स्तोत्र-मन्त्रस्य
श्रीरामचन्द्र ऋषिः,
श्रीहनुमान् वडवानल देवता, हां बीजम्, हीं
शक्तिं, सौं कीलकं,
मम समस्त विघ्न-दोष-निवारणार्थे, सर्व-
शत्रुक्षयार्थे

सकल-राज-कुल-संमोहनार्थे, मम समस्त-रोग-
प्रशमनार्थम्
आयुरारोग्यैश्वर्याऽभिवृद्धयर्थं समस्त-पाप-क्षयार्थं
श्रीसीतारामचन्द्र-प्रीत्यर्थं च हनुमद् वडवानल-
स्तोत्र जपमहं करिष्ये।

ध्यान

मनोजवं मारुत-तुल्य-वेगं जितेन्द्रियं बुद्धिमतां
वरिष्ठं।
वातात्मजं वानर-यूथ-मुख्यं श्रीरामदूतम् शरणं
प्रपद्ये॥

ॐ हां हीं ॐ नमो भगवते श्रीमहा-हनुमते
प्रकट-पराक्रम
सकल-दिङ्मण्डल-यशोवितान-धवलीकृत-जगत-
त्रितय

वज्र-देह रुद्रावतार लंकापुरीदहय उमा-अर्गल-
मन्त्र
उदधि-बंधन दशशिरः कृतान्तक सीताश्वसन
वायु-पुत्र

अञ्जनी-गर्भ-सम्भूत श्रीराम-लक्ष्मणानन्दकर
कपि-सैन्य-प्राकार
सुग्रीव-साह्यकरण पर्वतोत्पाटन कुमार-
ब्रह्मचारिन् गंभीरनाद

सर्व-पाप-ग्रह-वारण-सर्व-ज्वरोच्चाटन डाकिनी-
शाकिनी-विध्वंसन
ॐ हां हीं ॐ नमो भगवते महावीर-वीराय सर्व-
दुःख निवारणाय

ग्रह-मण्डल सर्व-भूत-मण्डल सर्व-पिशाच-
मण्डलोच्चाटन
भूत-ज्वर-एकाहिक-ज्वर, द्वायाहिक-ज्वर,
त्रयाहिक-ज्वर

चातुर्थिक-ज्वर, संताप-ज्वर, विषम-ज्वर, ताप-
ज्वर,
माहेश्वर-वैष्णव-ज्वरान् छिन्दि-छिन्दि यक्ष ब्रह्म-
राक्षस
भूत-प्रेत-पिशाचान् उच्चाटय-उच्चाटय स्वाहा।

ॐ हां हीं ॐ नमो भगवते श्रीमहा-हनुमते
ॐ हां हीं हूं हैं हौं हः आं हां हां हां हां

ॐ सौं एहि एहि ॐ हं ॐ हं ॐ हं ॐ हं
ॐ नमो भगवते श्रीमहा-हनुमते श्रवण-
चक्षुर्भूतानां

शाकिनी डाकिनीनां विषम-दुष्टानां सर्व-विषं हर
हर
आकाश-भुवनं भेदय भेदय छेदय छेदय मारय
मारय

शोषय शोषय मोहय मोहय ज्वालय ज्वालय
प्रहारय प्रहारय शकल-मायां भेदय भेदय
स्वाहा।

ॐ हां हीं ॐ नमो भगवते महा-हनुमते सर्व-
ग्रहोच्चाटन
परबलं क्षोभय क्षोभय सकल-बंधन मोक्षणं कुरु-
कुरु

शिरः-शूल गुल्म-शूल सर्व-शूलान्निर्मूलय निर्मूलय
नागपाशानन्त-वासुकि-तक्षक-कर्कोटकालियान्
यक्ष-कुल-जगत-रात्रिञ्चर-दिवाचर-सर्पान्निर्विषं
कुरु-कुरु स्वाहा।

ॐ हां हीं ॐ नमो भगवते महा-हनुमते
राजभय चोरभय पर-मन्त्र-पर-यन्त्र-पर-तन्त्र

पर-विद्याश्छेदय छेदय सर्व-शत्रून्नासय
नाशय असाध्यं साध्य साध्य हुं फट् स्वाहा।